UGC Approved Journal
Research Link

Since March 2002

An International, Registered & Referred Monthly Journal :
Sanskrit Literature
Research Link - 164, Vol - XVI (9), November - 2017, Page No. 138-140
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

सौन्दरनन्द महाकाव्य में शील परक मानव मूल्य : एक शोध

प्रस्तुत शोधपत्र में सौन्दरनन्द महाकाव्य में शील परक मानव मूल्यों का अध्ययन किया गया है। महाकवि अश्वघोष कहते हैं कि जिस प्रकार शत्रुओं का दमन होने पर व्यक्ति शांत चित्त हो जाता है, उसी प्रकार इन्द्रियों के शांत होने पर व्यक्ति शांत हो जाता है और एक स्थिर आत्मा बन जाता है। इसलिए महाकवि कहते हैं कि मनुष्य को अपनी इन्द्रियों एवं शरीर आदि पर नियंत्रण रखना चाहिए, तभी हमारे आचार और विचार शुद्ध होंगे, तभी हमारे मुख से निकले हुए एक-एक शब्द पत्थर की लकीर बन जाते हैं और उतनी आसानी से लकीर मिट भी जाती है। यह बात स्पष्ट होती है कि संभावित जीवन ही हमारा जीवन होना चाहिए और महाकवि अश्वघोष के ग्रंथों में यह बात स्वतः ही सिद्ध हो जाती है। उनके ग्रंथों में जनजीवन के लिए पथ-प्रदर्शक है। शील के प्रति सदैव सजग रहना और जीवन के आनंद को सर्वत्र बिखेरना चाहिए, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

डॉ.एस.एस.गौतम* एवं राजाभइया अहिरवार**

शीलः शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बंध में :

शीलशब्दस्य उत्पतिः शील् अच् प्रत्येयन भवति यः स्वभाववरूपे प्रयुक्तः भवति। शीलः मानवस्य अतिश्रेष्ठः नैतिकगुणः अस्ति। अयं गुणः सर्वेषु गुणेषु सर्वोपरि वर्तते। नरस्य सर्वे गुणाः शीले एव समाविष्टाः भवन्ति। शीलः मनुष्यस्य इहलौकिक – पारलौकिक उन्नतौ समर्थोअस्ति। सर्वेषु शास्त्रोषु शीलस्य महत्तां स्वयकरोत्।''

सम्पूर्ण वाङ्मय में शील सम्बन्धी मानव मूल्यों को बताया गया है। प्राचीन ग्रन्थों में महाभारत,रामायण, वेद, पुराण, उपनिषद्, ब्राह्मण वेदांड्. दर्शन, अन्य ग्रन्थों मे सदियों से शील सम्बन्धी मानव मूल्यों को हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि एवं विद्वानों ने जन मानस के शीलपरक मानव मूल्यों पर प्रकाश डाल चुके हैं। परन्तु मानव, मानव मे भिन्नता रखता है। कुछ विद्वान शीलपरक मानव मूल्यो से सहमत हैं, कुछ असहमत हैं। क्योंकि कुछ लोग वर्ण व्यवस्था को मानने वाले लोग अपने आपको श्रेष्ठ बनाये रहने के लिय कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को जाति आधारित मानते हैं, जो असत्य है, क्योंकि भागवत गीता में श्री कृष्ण ने स्वयं अपने मधुर वचनों में कहा था कि कर्म ही श्रेष्ठ है।

कर्मण्मणाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु भूमी ते सड्गोडस्त्वकर्मणि।। (1)

अर्थ तेरा कर्म करने मे ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं, इसलिये तू कर्मो का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने मे ही आसक्ति न हो।

जो कि आडम्बरवादी लोग इस व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते हैं, जो असत्य है, वही कट्टरपंथी लोग शीलपरक मानव मूल्यों की अवहेलना करते हैं।

जिससे सभ्यता एवं सस्कृति को हानि होती है तथा इतना ही नहीं वह जन–मानस को प्रभावित करती है, जो सभ्यता के विकास में बाधक सिद्ध होती है तथा शीलपरक मानव मूल्यों की अवहेलना करते वे सभ्य अशिक्षित, भोले – भाले लोगों पर दबाव पूर्वक धर्म एवं कट्टरतावादी सभ्यता का आडम्बर कर पाठ पढ़ाते है। अनेक विद्वानों ने मानव मूल्यों सन्दर्भ में मत दिये हैं। निश्चित रूप से मानवीय मूल्यों और नैतिक मूल्यों, शील प्रेमपरक मूल्यों का आधार स्तम्भ शीलपरक मानव मूल्य ही हैं, जो किसी भी सभ्यता के विकास को दर्शाते हैं।

आदि काल से अब तक जैसे–जैसे विकास हुआ, जनमानस वैसे – वैसे व्यवहार और चरित्र का पतन होता गया। बड़े दुःख की बात यह है कि शिक्षित, विद्वान व्यक्तियों व मनीषी इस स्थिति को पहचानते तो हैं, लेकिन कुछ करना नहीं चाहते, क्योंकि उनके ऊपर राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव हावी होते हैं। इस कारण वह उचित न्याय करने में एवं शीलपरक मानव मूल्यों की अवहेलना करते हैं। जो विशाल मानव समाज के लिए मानसिक प्रदूषण का कारण बनते हैं।

''भीष्म हो अथवा युधिष्ठिर या कि हो भगवान बुध्द हो कि अशोक, गाँधी हो कि ईशु महान, सिर झुका सबको, सभी को श्रेष्ठ निज से मान्, मात्र वांचिक ही उन्हें देता हुआ सम्मान, दग्ध कर पर को, स्वयं भी भोगता दुख–दाह, जा रहा मानव चला अब भी पुरानी राह।'' (2)

महाकवि अश्वघोष ने अपने महाकाव्य सौन्दरनन्द में शीलपरक नियमों को बताया है। सौन्दरनन्द महाकाव्य का 13वॉं सर्ग शील सम्बंधी नियमों से परिपूर्ण है। इस आवश्यक 'शील' का अर्थ होता है, आचार अर्थात् हमारे जो कार्य हों वह शुद्ध हों, हमें उनकी शुद्धता के प्रति सचेत होना चाहिए। महाकवि लिखते हैं कि :

शील हि शरणं सौम्यं कान्तार इव दैशिकः।
पित्रं बन्धुश्च रक्षा च धनं च बलमेवच।। (4)

***शोध-निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग), शासकीय स्वशासी महाविद्यालय, दतिया (मध्यप्रदेश)**
****शोधार्थी (संस्कृत विभाग), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला-सतना (मध्यप्रदेश)**

हे सौम्य ! निश्चय ही शील शरण (पर की तरह रक्षक) है। जंगल में पथ प्रदर्शक के समान है। शील, मित्र, बन्धु, रक्षक, धन और बल है।

यहाँ पर स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार से हम अपने घर में सभी प्रकार सुरक्षित रहते हैं, ठीक उसी प्रकार यदि हमारे आचार – विचार शीलवत् हों, तो हमारा आचरण भी शुद्ध रहता है।

यतः शीलमतः सौम्य शीलं संस्कृतमर्हसि।
एतत्स्थानमथानन्यं मोक्षारम्भेषु योगिनाम्।। (3)

हे सौम्य ! क्योकि शील ऐसा है। अतः शील को श्शुद्ध रखो। मोक्ष के लिए साधना का आरम्भ करने वाले योगियों के लिए यह एक मात्र आश्रम स्थल है।

भेतर्ष्यं न तथा शत्रोर्नाग्नेर्नाहेर्न चाशनेः।
इन्द्रियेभ्योः यथा स्वेभ्यस्तैरजस्त्रं हि हन्यते।। (5)

शत्रु, अग्नि सर्प तथा बज्र से भी उतना नहीं डरना चाहिए, जितना कि अपनी इन्द्रियों से, क्योंकि उनके (इन्द्रियों) द्वारा निरन्तर प्रहार किया जाता है।

''सहनशीलता क्षमा, दया को कभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग हैं।'' (6)

सच है क्षमा, दया, नैतिकता अहिंसा, दूसरों की परवाह, मनुष्यता की पहचान है, लेकिन आज के समाज में यह मूल्य कहाँ दिखाई देते हैं। नैतिकता मन का योग है, जिसके लिए किताबों या आक्षरिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं है, लेकिन बुद्धि के मान पर चढ़ा मनुष्य, कब मन और मानवीयता की हदें पार कर गया, पता ही नहीं चला। यथा

''है बढता गया है मस्तिष्क ही निःशेष,
छूटकर पीछे गया है रह, हृदय का देश,
नर मनाता नित्य नूतन बुद्धि का त्योहार,
प्राण में करते दुखी हो देवता चीत्कार।'' (7)

यह देवता स्नेह चाहता है, प्रेम चाहता है। ज्ञान इसकी मंजिल नहीं है, लेकिन आधुनिक समाज की गलती है कि बौध्दिक ज्ञान तो मनुष्य के पास बहुत है, परन्तु व्यावहारिक ज्ञान और आत्मिक ज्ञान के क्षेत्र में वह लगातार पिछड़ता जा रहा है। यह कोमलता कैसे उत्पन्न है ? दुखी प्राण को राहत कैसे मिले ? यही मुख्य प्रश्न है। आज सभी कुछ नहीं बहुत कुछ चाहिए। यूं कहें सभी कुछ चाहिए। इसे पाने की दौड़ ने इच्छाओं और आकांक्षाओं को बढ़ा दिया है। जिसके चलते मनुष्य अपने कर्तव्य भूल गया है। इस स्थिति में कर्तव्य ज्ञान की इच्छा कहाँ से जाग्रत हो, कौन शुरूआत कर ? सभी अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ दूसरों पर जिम्मेदारी थोपना चाहते हैं, इस समाज में युधिष्ठिर कम दुर्योधन असंख्य हैं।

तस्मादेषामकुशलकराणामरीणां
चक्षुर्घाण श्रवणरसनस्पर्शनानाम्।
सर्वावस्थं भव विनियमादप्रमत्तों
मास्मित्रर्थे क्षणमपि कृथास्त्वं प्रमादम्।। (8)

इसलिए चक्षु, घ्राण, श्रवण, जिह्वा और त्वगिन्द्रिय –इन अकल्याण करने वाले शत्रुओं का नियन्त्रण करके सभी अवस्थाओं मे सावधान बनो। इस विषय में तुम क्षण भर भी प्रमाद मत करो।

इस प्रकार तथागत ने नन्द को समझाया और नन्द के साथ हमारे समाज को समझाया। उन्होंने पुरूष के कर्तव्य, नारी के कर्तव्य, अतिथि सत्कार, ज्ञान का सत्कार क्षत्रियों के कर्तव्यों आदि का वर्णन विस्तार से किया है। हमें अपने सदाचार से अपने कर्तव्य पालन में संलग्न रहना चाहिए, जैसे– धूल से पैदा होने वाला सोना धूल के गुणों से रहित होता है, उसी प्रकार हमारा आचरण भी होना चाहिए।

यद्यपि कमल जल में ही उत्पन्न होता है। फिर भी वह जल की एक बूँद को धारण नही करता है, उसी प्रकार हमें अपने आचरण को रखना चाहिए। जब हमारा शील पवित्र हो जायेगा, तो हमारी वाणी, व्यापार या कार्य शुद्ध होकर स्वयं विभूषित होने लगेंगे, जो हमारा मन कहे, वाणी कहे वही हाथ करें। अर्थात् हमारी वाणी, कर्म और मन एक हो जायेगें तो शुद्धता स्वाभाविक आ जायेगी। शील हमारे घर रूपी शरीर का रक्षक होता है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यायो न श्शोषयति मारूतः।। (9)

अर्थात्– इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकता, इसको आग जला नही सकती, जल गला नही सकता और वायु सुखा नहीं सकती है, तो फिर कष्ट किस को होगा। आत्मा अव्यक्त है। नरक के लिए जो हम कहते हैं, वह स्वयं गीता उसे खण्डित करती है, तो यह बात स्पष्ट होती है कि शरीर का मृत अवस्था में जाने से पूर्व जो कष्ट हुआ वह नरक है और जो सुख मिला वह स्वर्ग है। दोनों मनुष्य यही पर भोगता है और कहीं नहीं, लेकिन सदाचार से इन्द्रियों को शांत करने से हमें मोक्ष की प्राप्ति अवश्य हो जाती है। हमारा शत्रु हम पर प्रतिदिन वार नहीं कर सकता, लेकिन हमारी इन्द्रिय रूपी शत्रु हम पर हर पल बार करती रहती है। उन के बार से हमको बचना चाहिए।

महाकवि लिखते हैं कि :

मनुष्यहरिणान् ध्नन्ति कामव्याधेरिता ह्रादि।
विहन्यनते यदि न ते ततः पतन्ति तैः क्षत्ताः।। (10)

कामरूपी व्याध के द्वारा चलाये गये (अर्थात पॉच इन्द्रियों के द्वारा) वाण मनुष्य रूपी हरिणों को उनके हृदय में प्रहार करते हैं। यदि वे वाण रोके न गये तब तो उन से घायल होकर मनुष्य गिर पड़ते हैं। यह श्लोक जब कहा गया और आज यह हमारे समाज में सभी प्रकार से लागू होता है। इसके बाद महाकवि ने उपाय बताये हैं, वे कहते हैं–

नियमाजिरसंस्थेन धैर्मकार्मुकधारिणा।
निपतन्ता निवार्यास्ते महता स्मृति वर्मणा।। (11)

नियम रूपी प्रांगण में खड़े हुए धैर्यरूपी धनुष को धारण किए हुए व्यक्ति द्वारा महान स्मृति रूपी कवच के द्वारा वे गिरते हुए तीर रोके जाने चाहिए।

''दिव्य भावों के जगत में जागरण का गान,
मानवों का श्रेय आत्मा का किरण–अभियान।'' (12)

परन्तु अन्याय, अशान्ति के रास्ते पर चलता हुआ मनुष्य मानवीय मूल्यों को ताक पर रख चुका है इस स्थिति में वर्तमान स्थिति क्या हो गयी है, इस से कोई अनजान नही है।

''साम्य की वह रश्मि स्निग्ध उदार,
कब खिलेगी, कब खिलेगी विश्व में भगवान ?
कब सुकोमाल ज्योति से अभिसिक्त,
हो, सरस होंगे जली – सूखी रसा के प्राण ?'' (13)

निश्चित ही मानवीय मूल्यों और नैतिक मूल्यों का यह प्रश्न अत्यंत जटिल है। इस प्रश्न का उत्तर तभी मिल सकता है, जब प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में ईमानदारी और सार्थक प्रयास करें।

महाकवि अश्वघोष कहते हैं कि जिस प्रकार शत्रुओं का दमन होने पर व्यक्ति शांत चित्त हो जाता है। उसी प्रकार इन्द्रियों के शान्त होने पर व्यक्ति शान्त हो जाता है और एक स्थिर आत्मा बन जाता हैं। इसीलिए महाकवि कहते हैं कि मनुष्य को अपनी इन्द्रियों एवं शरीर आदि पर नियन्त्रण रखना चाहिए तभी हमारे आचार और विचार शुद्ध होगें। तभी हमारे मुख से निकले हुए एक –एक शब्द पत्थर की लकीर बन जाते हैं और उतनी आसानी से लकीर मिट भी जाती है। अतः यह बात स्पष्ट होती है कि संभावित जीवन ही हमारा जीवन होना चाहिए और महाकवि अश्वघोष के ग्रन्थों में यह बात स्वतः ही सिद्ध हो जाती है। उनके ग्रन्थों में जनजीवन के लिए पथ प्रदर्शक है। शील के प्रति सदैव सजक रहना और जीवन के आनंद को सर्वत्र बिखेरना चाहिए, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

जिस प्रकार हमें अपने जीवन से स्नेह है उतना ही स्नेह हमें अपने आचरण से होना चाहिए और यही शील के प्रति प्रेम की भावना है।

<u>सन्दर्भ</u> :

(1) श्रीमद् भगवतगीता–2/47.

(2) दिनकर, रामधारी सिंह : कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 66.

(3) सौन्दरनन्द – 13/28.

(4) सौन्दरनन्द 13/29.

(5) सौन्दरनन्द – 13/31.

(6) दिनकर, रामधारी सिंह : कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 26.

(7) दिनकर, रामधारी सिंह : कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 67.

(8) सौन्दरनन्द – 13/55.

(9) श्रीमद् भगवतगीता, अध्याय – 2/23, पृ0 32.

(10) सौन्दरनन्द – 13/36.

(11) सौन्दरनन्द – 13/37.

(12) दिनकर, रामधारी सिंह : कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 67.

(13) दिनकर, रामधारी सिंह : कुरूक्षेत्र, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 72.

❁❁

UGC -

APPROVED - JOURNAL

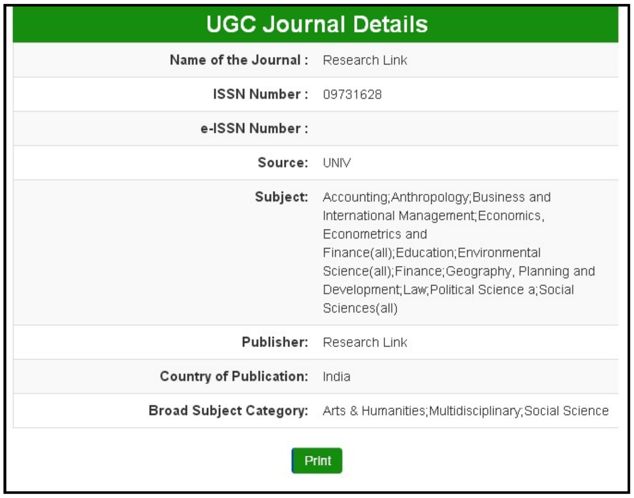

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting;Anthropology;Business and International Management;Economics, Econometrics and Finance(all);Education;Environmental Science(all);Finance;Geography, Planning and Development;Law;Political Science a;Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities;Multidisciplinary;Social Science

Print

<u>शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम</u>

(1) शोध-पत्र **<u>1500-1700 शब्दों से अधिक नहीं</u>** होना चाहिए।

(2) **<u>हिन्दी एवं मराठी माध्यम के शोधपत्रों को कृतिदेव 10</u>** (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(3) **<u>पंजाबी माध्यम के शोधपत्रों को अनमोल लिपि</u>** (AnmolLipi) या **<u>अमृत बोली</u>** (Amritboli) या **<u>जॉय</u>** (Joy) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(4) अंग्रेजी माध्यम के शोधपत्र टाईम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' या 'माइक्रोसाफ्ट वर्ड' में भेजे जा सकते हैं।

(4) शोधपत्र की विधि - (1) शीर्षक (2) एबस्ट्रेक्ट (3) की-वर्ड्स (5) प्रस्तावना/प्रवेश (5) उद्देश्य (6) शोध परिकल्पना (7) शोध प्रविधि एवं क्षेत्र (8) सांख्यिकीय तकनीक (9) विवेचन या विश्लेषण (10) सुझाव (11) निष्कर्ष एवं (12) संदर्भ ग्रंथ सूची।

(6) संदर्भ ग्रंथ सूची इस प्रकार दें -

<u>For Books</u> :

(1) Name of Writer, "Name of Book", Publication, Place of Publication, Year of Publication, Page Number/numbers.

<u>For Journals</u> :

(2) Name of Writer, "Title of Article", Name of Journal, Volume ....., Issue ....., Page Numbers.

<u>Web references</u> :

http://utc.iath.virginia.edu/interpret/exhibits/hill/hill.html

(7) **<u>गुजराती माध्यम</u>** के शोधपत्र **<u>हरेकृष्णा (Harekrishna)</u>, <u>टेराफोंट वरुण (Terafont Varun)</u>, <u>टेराफोंट आकाश (Terafont Aaksah)</u>** में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजे जा सकते हैं।

(8) शोधपत्र की साफ्टकॉपी रिसर्च लिंक के ई-मेल आईडी researchlink@yahoo.co.in पर भेजने के बाद हॉर्डकॉपी, शोधपत्र के मौलिक होने के घोषणा पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'रिसर्च लिंक' के कार्यालय को प्रेषित करें।

❁❁